Naveen Shodh Sansar (An International Refereed/ Peer Review Research Journal)
RNI No.- MPHIN/2013/60638, ISSN 2320-8767, E- ISSN 2394-3793, Scientific Journal Impact Factor (SJIF)- 7.671
January to March 2024, E-Journal, Vol. I, Issue XLV

जोबट विकासखण्ड में जनजातीय महिला कृषकों के विकास में सहकारी साख का योगदान (जिला सहकारी केन्द्रीय बैंक मर्यादित, जोबट के विशेष में)

डॉ. हेमता डुडवे*

* सहायक प्राध्यापक (अर्थशास्त्र) क्रांतिकारी शहीद छीतुसिंह किराड़ शासकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय, अलीराजपुर (म.प्र.) भारत

प्रस्तावना – आज हम 21 वीं सदी में प्रवेश कर चुके हैं, इसके बावजूद तथा महिलाओं की भागीदार के बिना देश व समाज की सफलता असंभव मानने के बावजूद जब महिला कृषक की समस्याओं की बात आती है तो आज भी वहीं वस्तु स्थिति देखने को मिलती है। जो आज से कई दशक पूर्व देखने को मिलती थीं। संख्या में बढ़ते के बावजूद भी यदि सफलता के दृष्टिकोण से देखा जाये तो सफल कृषक के रूप में पुरूषों की तुलना में महिलाओं का अनुपात वहीं है जो कई वर्षो पूर्व था। यही वजह है कि महिलाओं के आर्थिक उत्थान हेतु प्रस्तुत की गई योजनाओं का संचालन हो रहा है, परन्तु महिलाओं इन योजनाओं का पूरा लाभ नहीं ले पा रही हैं।

इन सबके बावजूद कुछ संतोषजनक बातें हुई है। स्वतंत्रता के बाद देश में महिलाओं के सामाजिक, आर्थिक दर्जे में सुधार लाने के लिये सरकार की ओर से कई सकारात्मक और समन्वित प्रयास किये गये हैं। पहली पंचवर्षीय योजना से ही विकास प्रक्रिया में महिलाओं को समानता का दर्जा दिलाने के लक्ष्य पर विशेष रूप से ध्यान केन्द्रीय किया जाता रहा है। इस संदर्भ में जहाँ पहली चार योजनाओं में महिलाओं के कल्याण की विभिन्न गतिविधियों और उनकी शिक्षा को उच्च प्राथमिकता देने पर जोर दिया गया है, वहीं पाँचवी से आठवीं योजनाओं में नीतिकारों के दृष्टिकोण में कुछ बदलाव दिखाई देता है। इनमें महिलाओं के कल्याण की बजाय उनके समग्र विकास का लक्ष्य निर्धारित करते हुए उनके स्वास्थ्य, शिक्षा और रोजगार पर विशेष रूप से जोर दिया गया है। इनके बाद की अब तक की योजनाओं में महिला सशक्तिकरण एवं महिला जैसे विकसित क्षेत्रों की खोज करके इन्हें बढ़ावा देने का लक्ष्य रखा गया। ग्रामीण क्षेत्रों में कृषि साख की आवश्यकता की पूर्ति दो साधनों से करता है। पहला साधन जिससे वे साख पूर्ति करते है– साहूकारों, देशी बैंकर्स। दूसरा साधन वह है जिसमें बैंक एवं सहकारी समितियाँ शामिल है। शासन द्वारा स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद ग्रामीण क्षेत्रों में साख संबंधी व्यवस्था के लिये समय–समय पर संस्थागत व्यवस्था के प्रयास किये गये है।

उद्देश्य:

1. महिला कृषकों के विकास में जिला सहकारी केन्द्रीय बैंक मर्यादित जोबट की भूमिका ज्ञात करना।
2. महिला कृषकों कि आर्थिक, सामाजिक स्थिति ज्ञात करना।

समंक का संकलन– प्रस्तुत अध्ययन में शोध क्षेत्र के रूप में जोबट विकासखण्ड का चयन किया गया। जिसमें जोबट विकासखण्ड में सहकारी केन्द्रीय बैंक जोबट द्वारा महिला हितग्राहियों को लाभांवित किया गया है। उन महिला हितग्राहियों में से दैव निदर्शन पद्धति द्वारा 50 महिला हितग्राहियों का चयन कर उनका अध्ययन किया गया है। महिला हितग्राहियों की संख्या कम होने का कारण सहकारी बैंक से वहीं महिला ऋण ले सकती है जिसके नाम पर कृषि भूमि हो। किन्तु महिला हितग्रहियों के नाम पर सामान्यत: कृषि भूमि बहुत कम नाम पर होती है।

साहित्य समीक्षा:

1. **माथुर बी.एस** ने सहकारिता आन्दोलन के विकास, प्रगति, सहकारी संगठन का पुर्नगठन आदि का विस्तार से विवेचन किया गया है।[1]
2. **सक्सेना एम.पी** ने अपनी पुस्तक में मध्यप्रदेश में सहकारिता आंदोलन का विकास मध्यप्रदेश राज्य सरकार द्वारा लागू किये गये विभिन्न सरकारी अधिनियम एवं मध्यप्रदेश के सहकारिता आंदोलन के कार्यकलापों से संबंधित लगभग समस्त पहलुओं पर प्रकाश डाला है।[2]
3. **श्रीवास्तव सी.एल** में प्रकाशित अपनी पुस्तक में भारतीय ग्रामों कृषि उद्योगों के संदर्भ में सहकारिता व्यवस्था पर अपने विचार एवं साहित्य प्रस्तुत किए है तथा सहकारी समस्याओं की विवेचना करके आधुनिक प्रबंध तकनीकों पर बल दिया गया है।[3]

तथ्य का विश्लेषण– जनजातीय समाज में कृषि व कृशिक्षत पदार्थ ही हैं साथ ही कृषि से जुडे अन्य व्यवसायों से भी आय प्राप्त करते है। कृषि की अनार्थिकता एवं लगातार वर्षा के गिरते स्तर के कारण ग्रामीण लोगों ने मजदूरी को आय स्त्रोत के रूप में अपनाने लगे है। मजदूरी के लिए लोग एक स्थान से दुसरे स्थान की ओर पलायन का तरीका अपनाते हैं। जिससे उनकी वार्षिक आय भी बहुत कम है।

तालिका क्र. 01: ऋण लेने के पूर्व महिला हितग्राहियों की आय (वार्षिक)

क्र.	आय	महिला हितग्राहियों की संख्या	प्रतिशत
1.	5000 से 10000	06	12.00
2.	10000 से 15000	08	16.00
3.	15000से 20000	20	40.00
4.	20000 से अधिक	16	32.00
	योग	**50**	**100**

स्त्रोत:- सर्वेक्षण के आधार पर

उपरोक्त तालिका से स्पष्ट होता है कि जिला सहकारी केन्द्रीय बैंक से जुड़ने के पूर्व 12 प्रतिशत महिला हितग्राहियों की आय 5000 से 10000 के मध्य है। 16 प्रतिशत महिला हितग्राहियों की आय 10000 से 15000 तक के मध्य है। 40 प्रतिशत महिला हितग्राहियों की आय 15000 से 20000 के मध्य में है। 32 प्रतिशत महिला हितग्राहियों की आय 20000 से अधिक है।

तालिका क्र. 02: ऋण लेने के पश्चात् महिला हितग्राहियों की आय (वार्षिक)

क्र.	आय	महिला हितग्राहियों की संख्या	प्रतिशत
1.	10000 से 15000	16	32.00
2.	15000 से 20000	20	40.00
3.	20000से 25000	08	16.00
4.	25000 से अधिक	06	12.00
	योग	**50**	**100**

स्त्रोत:- सर्वेक्षण के आधार पर

उपरोक्त तालिका से स्पष्ट होता है कि जिला सहकारी केन्द्रीय बैंक से जुड़ने के पूर्व 32 प्रतिशत महिला हितग्राहियों की आय 10000 से 15000 के मध्य है। 40 प्रतिशत महिला हितग्राहियों की आय 15000 से 20000 तक के मध्य है। 16 प्रतिशत महिला हितग्राहियों की आय 20000 से 25000 के मध्य में है। 12 प्रतिशत महिला हितग्राहियों की आय 25000 से अधिक है।

तालिका क्र. 03: महिला हितग्राहियों के द्वारा बैंक से ऋण की राशि

क्र.	ऋण की राशि	महिला हितग्राहियों की संख्या	प्रतिशत
1.	5000 से 10000	05	10.00
2.	10000 से 15000	15	30.00
3.	15000 से 20000	24	48
4.	20000 से अधिक	06	12
	योग	**50**	**100**

स्त्रोत:- सर्वेक्षण के आधार पर

उक्त तालिका से स्पष्ट होता है कि 10 प्रतिशत महिला हितग्राहियों ने बैंक से ऋण की राशि 5000 से 10000 के मध्य लिया गया है। 30 प्रतिशत महिला हितग्राहियों ने बैंक से ऋण के रूप में

तालिका क्र. 04: महिला हितग्राहियों को ऋण प्राप्ति के पश्चात् उत्पादन में वृद्धि

क्र.	उत्पादन में वृद्धि	महिला हितग्राहियों की संख्या	प्रतिशत
1.	हाँ	42	84.00
2.	नहीं	08	16.00
	योग	**50**	**100**

स्त्रोत:- सर्वेक्षण के आधार पर

उक्त तालिका से स्पष्ट होता है कि 84 प्रतिशत महिला हितग्राहियों के फसल उत्पादन में वृद्धि हुई है। 16 प्रतिशत महिला हितग्राहियों के फसल उत्पादन में वृद्धि नहीं हुई है।

तालिका क्र.05: ऋण मिलने के पश्चात् हितग्राहियों के सामाजिक-आर्थिक स्थिति में परिवर्तन हुआ

क्र.	ऋण मिलने के पश्चात् हितग्राहियों के स्थिति में परिवर्तन हुआ	महिला हितग्राहियों की संख्या	प्रतिशत
1.	हाँ	44	88.00
2.	नहीं	06	12.00
	योग	**50**	**100**

स्त्रोत:- सर्वेक्षण के आधार पर

उक्त तालिका से स्पष्ट होता है कि 88 प्रतिशत महिला हितग्राहियों के द्वारा ऋण प्राप्त करने के बाद में इनकी स्थिति में परिवर्तन आया है। 12 प्रतिशत महिला हितग्राहियों के ऋण प्राप्त करने के बाद भी स्थिति में परिवर्तन नहीं आया है।

निष्कर्ष- कृषि प्रधान देश है, जहाँ अधिकतम जनसंख्या गांवों में निवास करती है और जनजातीय क्षेत्रों में गरीबी अधिक है। वहाँ बैंकों की भूमिका महत्वपूर्ण हो रही है। जिला सहकारी केन्द्रीय बैंक द्वारा महिला हितग्राहियों के विकास से ही इनके आधारभूत सुविधाओं में काफी सुधार हुआ है और उनकी आर्थिक, सामाजिक स्थिति में भी सुधार हुआ है। परन्तु आज भी जनजातियों क्षेत्रों में कृषि के क्षेत्र में महत्वपूर्ण कार्य करना हैं जैसे -बिजली, पानी, आदि।

संदर्भ ग्रंथ सूची :-

1. माथुर बी.एस. भारत में 'सहकारिता' साहित्य भवन, आगरा 2000।
2. सक्सेना एम.पी. मध्यप्रदेश में सहकारी आभा प्रकाशन, भोपाल 1979-80।
3. श्रीवास्तव सी.एन. सहकारिता का अर्थशास्त्र, सरस्वती सदन, जवाहर नगर, नई दिल्ली 1970 ।
4. नीलमेघ चतुर्वेदी सहकारिता विचार और विश्लेषण, अजय प्रकाश, 42 सिरपुर, धार रोड़, दुर्गा मंदिर के पास, इन्दौर 1997
5. अर्थशास्त्र डॉ. जे.पी. मिश्रा, साहित्य भवन पब्लिकेशन्स।
6. 'सहकारिता विचार और विश्लेषण' श्री नील मेघ चतुर्वेदी विजय प्रकाशन, इन्दौर 1997।

****